

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 1, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1: दिल्ली सल्तनत के दौरान इक्ता प्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इक्ता अनिवार्य रूप से एक राजस्व असाइनमेंट का अनुदान था और इसने धारक को भूमि पर स्वचालित रूप से स्वामित्व का अधिकार नहीं दिया था।
2. अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान, केंद्रीय सरकार ने राजस्व संग्रह को सैन्य प्रशासन से अलग करके मुफ्ती पर अपने नियंत्रण को काफी हद तक मजबूत कर लिया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) कोई भी कथन नहीं
- (d) उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्य से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** इक्ता मुख्य रूप से एक राजस्व असाइनमेंट था। मुफ्ती वेतन के बदले राजस्व एकत्र करने का हकदार था, लेकिन उसका भूमि पर कोई मालिकाना हक नहीं था।
- **कथन 2 गलत है।** अलाउद्दीन खिलजी ने ऑडिट, ट्रांसफर और सीधे नियंत्रण के माध्यम से मुफ्ती पर निगरानी कड़ी कर दी थी, लेकिन उसने राजस्व संग्रह को सैन्य प्रशासन से पूरी तरह अलग नहीं किया था। इस तरह की अधिक प्रशासनिक भिन्नता बाद के शासकों के तहत, विशेष रूप से मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह तुगलक के शासनकाल में क्रमिक रूप से विकसित हुई।

वैल्यू एडिशन (मूल्यवर्धन):

- इक्ता हस्तांतरणीय (ट्रांसफरेबल) था।
- सुल्तान के पास भूमि का अंतिम स्वामित्व रहता था।
- अधिकृत खर्चों को पूरा करने के बाद अतिरिक्त राजस्व को केंद्रीय राजकोष में जमा किया जाना था।

प्रश्न 2: सहस्राब्दी पारिस्थितिकी तंत्र मूल्यांकन (Millennium Ecosystem Assessment) ढांचे के तहत निम्नलिखित में से किस पारिस्थितिकी तंत्र सेवा को सबसे उचित रूप से "सहायक पारिस्थितिकी तंत्र सेवा" (supporting ecosystem service) के रूप में वर्गीकृत किया गया है?

- (a) आद्रभूमि (वेटलैंड्स) द्वारा बाढ़ विनियमन
- (b) कीड़ों द्वारा कृषि फसलों का परागण

(c) पोषक तत्वों का चक्रण जो मिट्टी की उर्वरता बनाए रखता है

(d) वनों द्वारा कार्बन पृथक्करण (सीक्वेंस्ट्रेशन)

उत्तर: (c) पोषक तत्वों का चक्रण जो मिट्टी की उर्वरता बनाए रखता है

स्पष्टीकरण:

सहस्राब्दी पारिस्थितिकी तंत्र मूल्यांकन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को चार श्रेणियों में वर्गीकृत करता है:

- **प्रावधान सेवाएं (Provisioning Services):** भोजन, ताजा पानी, लकड़ी।
- **विनियमन सेवाएं (Regulating Services):** जलवायु विनियमन, बाढ़ नियंत्रण, रोग विनियमन।
- **सांस्कृतिक सेवाएं (Cultural Services):** मनोरंजन, आध्यात्मिक मूल्य।
- **सहायक सेवाएं (Supporting Services):** पोषक तत्वों का चक्रण, मिट्टी का निर्माण और प्राथमिक उत्पादन जैसी मौलिक पारिस्थितिकी प्रक्रियाएं जो अन्य सभी पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को सक्षम बनाती हैं।

इस प्रकार, पोषक तत्वों का चक्रण सबसे उपयुक्त सहायक पारिस्थितिकी तंत्र सेवा है।

प्रश्न 3: पूंजी खाता लेनदेन और बाह्य क्षेत्र प्रबंधन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को आम तौर पर विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) की तुलना में अधिक स्थिर माना जाता है क्योंकि इसमें आमतौर पर दीर्घकालिक उत्पादक हित शामिल होता है।
2. यदि पूंजी खाता अधिशेष दर्ज करता है, तो निरंतर चालू खाता घाटा (current account deficit) आवश्यक रूप से विदेशी मुद्रा भंडार में कमी लाता है।
3. भारत की वर्तमान विनिमय दर व्यवस्था के तहत, भारतीय रिजर्व बैंक किसी भी निश्चित विनिमय दर को लक्षित किए बिना विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप कर सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** FDI आम तौर पर प्रबंधकीय नियंत्रण के साथ दीर्घकालिक निवेश का प्रतिनिधित्व करता है और FPI की तुलना में अपेक्षाकृत कम अस्थिर होता है।
- **कथन 2 गलत है।** चालू खाता घाटे को पूंजी प्रवाह के माध्यम से वित्तपोषित किया जा सकता है। यदि पूंजी प्रवाह चालू खाता घाटे से अधिक है, तो भंडार बढ़ भी सकता है।

- **कथन 3 सही है।** भारत प्रबंधित प्लोट विनिमय दर व्यवस्था (managed float exchange rate regime) का पालन करता है। आरबीआई निश्चित विनिमय दर बनाए रखने के बजाय अत्यधिक अस्थिरता को कम करने के लिए हस्तक्षेप करता है।

कांसेप्ट चेक:

- चालू खाता घाटा (CAD) स्वचालित भंडार में कमी।
- भुगतान संतुलन (Balance of Payments) = चालू खाता + पूंजी खाता + आरक्षित परिवर्तन।

प्रश्न 4: भारत में संवैधानिक संशोधन प्रक्रिया के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रत्येक संवैधानिक संशोधन विधेयक आवश्यक रूप से राष्ट्रपति की पूर्व सिफारिश प्राप्त करने के बाद ही पेश किया जाना चाहिए।
2. संवैधानिक संशोधन विधेयक को किसी राज्य विधानमंडल में पेश नहीं किया जा सकता है।
3. यदि दोनों सदन किसी संवैधानिक संशोधन विधेयक पर असहमत होते हैं, तो संसद की संयुक्त बैठक का कोई प्रावधान नहीं है।
4. कुछ संवैधानिक संशोधनों के लिए संसद द्वारा पारित होने के बाद कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** संवैधानिक संशोधन विधेयक पेश करने के लिए राष्ट्रपति की पूर्व सिफारिश की आवश्यकता नहीं होती है।
- **कथन 2 सही है।** ऐसे विधेयक केवल संसद के किसी भी सदन में पेश किए जा सकते हैं।
- **कथन 3 सही है।** अनुच्छेद 368 संवैधानिक संशोधन विधेयकों के लिए संयुक्त बैठक का प्रावधान नहीं करता है।
- **कथन 4 सही है।** संघीय प्रावधानों को प्रभावित करने वाले संशोधनों के लिए कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन की आवश्यकता होती है।

महत्वपूर्ण यूपीएससी ट्रेप:

- राष्ट्रपति की सिफारिश $\rightarrow$ पेश करने से पहले आवश्यक नहीं।

- पारित होने के बाद राष्ट्रपति की सहमति $\rightarrow$ अनिवार्य।

प्रश्न 5: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- **कथन (Assertion-A):** भारत के पश्चिमी तटीय मैदान आम तौर पर पूर्वी तटीय मैदानों की तुलना में बहुत संकरे होते हैं।
- **कारण I (Reason I):** पश्चिमी घाट अपनी अधिकांश लंबाई में अरब सागर के तट के लगभग समानांतर और बहुत करीब चलते हैं।
- **कारण II (Reason II):** पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ आम तौर पर अरब सागर के तट के साथ व्यापक डेल्टा बनाती हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन सही है, कारण I सही है, कारण II सही है, और दोनों कारण कथन की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन सही है, कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।
- (c) कथन गलत है, कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।
- (d) कथन सही है, कारण I गलत है, लेकिन कारण II सही है।

उत्तर: (b) कथन सही है, कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।

स्पष्टीकरण:

- **कथन सही है।** पश्चिमी तटीय मैदान आमतौर पर संकरे होते हैं, जबकि पूर्वी तटीय मैदान बहुत चौड़े होते हैं।
- **कारण I सही है।** पश्चिमी घाट अरब सागर के तट के बहुत करीब स्थित हैं, जिससे केवल एक संकरी तटीय पट्टी बचती है।
- **कारण II गलत है।** महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी डेल्टा बनाने वाली नदियाँ अरब सागर में नहीं, बल्कि बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। अधिकांश पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ छोटी होती हैं और व्यापक डेल्टा के बजाय ज्वारनदमुख (estuaries) बनाती हैं।

मुख्य यूपीएससी तथ्य:

- पश्चिमी तटीय मैदान संकरे, ज्वारनदमुख, जलमग्न तट।
- पूर्वी तटीय मैदान चौड़े, डेल्टाई तट, प्रमुख पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ।
- पश्चिमी घाट भारत में पठार और तट के बीच सबसे तेज ढलानों (escarpments) में से एक बनाते हैं।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1: निफ्टी500 अहिंसा इंडेक्स के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. निफ्टी500 अहिंसा इंडेक्स किसी भी क्षेत्र-विशिष्ट बहिष्करण मानदंडों को लागू किए बिना केवल पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ESG) स्कोर के आधार पर कंपनियों को बाहर करता है।
2. सौंदर्य प्रसाधनों के लिए पशु परीक्षण, चमड़ा उत्पादन और मांस प्रसंस्करण जैसी गतिविधियों में लगी कंपनियों को सूचकांक के निर्माण के दौरान नकारात्मक जांच (negative screening) के अधीन किया जाता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) कोई भी कथन नहीं
- (d) उपलब्ध जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** निफ्टी500 अहिंसा इंडेक्स केवल एक ESG इंडेक्स नहीं है। यह वित्तीय पात्रता मानदंडों के अलावा, अहिंसा (अहिंसा)-आधारित बहिष्करण जांच लागू करता है, जो गैर-हिंसा के सिद्धांत के असंगत गतिविधियों में शामिल कंपनियों को हटा देता है।
- **कथन 2 सही है।** सूचकांक उन कंपनियों को बाहर करता है जो पशु वध, मांस प्रसंस्करण, चमड़ा, पशु-परीक्षित सौंदर्य प्रसाधन (जहां लागू हो), और इसी तरह की गतिविधियों में महत्वपूर्ण रूप से शामिल हैं, जिससे निवेश नैतिक निवेश सिद्धांतों के साथ संरेखित होता है।

वैल्यू एडिशन (मूल्यवर्धन):

- निफ्टी 500 ब्रह्मांड से विकसित।
- एक विषयगत नैतिक निवेश सूचकांक का प्रतिनिधित्व करता है।
- यूपीएससी ESG निवेश को मूल्य-आधारित निवेश के साथ भ्रमित कर सकता है; वे समान नहीं हैं।

प्रश्न 2: हाल ही में घोषित EPFO 3.0 पहल से निम्नलिखित में से कौन सा सुधार सबसे अधिक रूप से जुड़ा है?

- (a) भारत की संचित निधि से वित्तपोषित यूनिवर्सल बेसिक पेंशन की शुरुआत
- (b) सरलीकृत निकासी के साथ बैंकिंग जैसी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से भविष्य निधि सेवाओं तक पहुंचने के लिए सदस्यों को सक्षम बनाना
- (c) सभी संगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली द्वारा कर्मचारी भविष्य निधि योजना का प्रतिस्थापन

(d) अटल पेंशन योजना में सभी EPFO ग्राहकों का अनिवार्य प्रवासन

उत्तर: (b) सरलीकृत निकासी के साथ बैंकिंग जैसी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से भविष्य निधि सेवाओं तक पहुंचने के लिए सदस्यों को सक्षम बनाना

स्पष्टीकरण:

EPFO 3.0 का उद्देश्य EPFO को एक प्रौद्योगिकी-संचालित, सदस्य-केंद्रित मंच में बदलना है, जो प्रदान करता है:

- त्वरित और सरलीकृत दावा निपटान।
- बैंकिंग जैसी डिजिटल सेवाएं।
- कम प्रलेखन।
- अधिक स्वचालन।
- बेहतर डिजिटल पहुंच।

सुधार ईपीएफ (EPF) को समाप्त नहीं करते हैं, और न ही वे इसे एनपीएस (NPS) या एपीवाई (APY) के साथ विलीन करते हैं।

प्रश्न 3: भारत के पहले स्वीकृत डेंगू टीके, Qdenga® के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. Qdenga® सभी चार डेंगू वायरस सीरोटाइप के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक लाइव क्षीणित टेट्रावेलेंट डेंगू टीका है।
2. इस टीके को नियामक अनुमोदन के तुरंत बाद भारत के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (Universal Immunisation Programme) के तहत सार्वभौमिक रूप से शामिल करने के लिए अनुमोदित किया गया है।
3. स्वीकृत संकेतों के तहत टीके के प्रशासन के लिए पिछला डेंगू संक्रमण आवश्यक रूप से एक अनिवार्य पूर्व शर्त नहीं है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** Qdenga® DENV-1, DENV-2, DENV-3 और DENV-4 को लक्षित करने वाला एक लाइव क्षीणित टेट्रावेलेंट टीका है।
- **कथन 2 गलत है।** विधिक अनुमोदन का तात्पर्य सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (UIP) में स्वचालित रूप से शामिल होना नहीं है। ऐसे समावेश के लिए अलग नीतिगत निर्णयों की आवश्यकता होती है।

- **कथन 3 सही है।** कुछ पहले के डेंगू टीकों के विपरीत जिनमें पूर्व संक्रमण की आवश्यकता होती थी, Qdenga के पास विधिक मार्गदर्शन के आधार पर व्यापक स्वीकृत संकेत हैं।

प्रश्न 4: अपडेटेड इंडेक्स ऑफ कोर इंडस्ट्रीज (ICI) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोर इंडस्ट्रीज का सूचकांक औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के लिए प्रमुख संकेतकों में से एक के रूप में कार्य करता है।
2. कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, स्टील, सीमेंट और बिजली आठ कोर उद्योग बनाते हैं।
3. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में आठ कोर उद्योगों का संयुक्त भार 50% से अधिक है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** ICI औद्योगिक उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण अग्रणी संकेतक है।
- **कथन 2 सही है।** ये आठ अधिसूचित कोर उद्योग हैं।
- **कथन 3 गलत है।** आठ कोर उद्योग मिलकर IIP का लगभग 40.27% हिस्सा बनाते हैं, न कि 50% से अधिक।

प्रश्न 5: मैगलेव ट्रेनों (Maglev Trains) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चुंबकीय उत्तरोत्थान (magnetic levitation) संचालन के दौरान ट्रेन और ट्रैक के बीच सीधे भौतिक संपर्क को समाप्त करता है।
2. सभी परिचालन मैगलेव प्रणालियाँ क्रायोजेनिक तापमान पर प्रशीतित अतिचालक चुंबकों का उपयोग करती हैं।
3. पहिया-रेल घर्षण की अनुपस्थिति के कारण, मैगलेव ट्रेनें गति के दौरान यांत्रिक घर्षण और ऊर्जा हानि से पूरी तरह मुक्त हैं।
4. इलेक्ट्रोमैग्नेटिक सस्पेंशन (EMS) और इलेक्ट्रोडायनामिक सस्पेंशन (EDS) मैगलेव प्रणालियों में उपयोग किए जाने वाले दो अलग-अलग तकनीकी दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** उत्तरोत्थान पहिया-ट्रैक संपर्क को हटा देता है।
- **कथन 2 गलत है।** कई वाणिज्यिक प्रणालियाँ (जैसे, शंघाई मैगलेव) आवश्यक रूप से अतिचालक चुंबकों के बजाय विद्युत चुम्बकीय निलंबन का उपयोग करती हैं।
- **कथन 3 गलत है।** यांत्रिक घर्षण समाप्त हो जाता है, लेकिन हवा का प्रतिरोध, विद्युत चुम्बकीय नुकसान और घटक पहनना अभी भी मौजूद हैं।
- **कथन 4 सही है।** EMS और EDS दो प्रमुख मैगलेव प्रौद्योगिकियाँ हैं।

यूपीएससी ट्विस्ट:

"कोई घर्षण नहीं" का अर्थ "कोई ऊर्जा हानि नहीं" नहीं है।

प्रश्न 6: हाल ही में खबरों में देखा गया कार्लापाटन बॉक्साइट ब्लॉक (Karlapat Bauxite Block), निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है?

(a) कोरापुट

(b) कालाहांडी

(c) रायगढ़ा

(d) सुंदरगढ़

Answer: (b) कालाहांडी

स्पष्टीकरण:

- कार्लापाटन बॉक्साइट ब्लॉक ओडिशा के कालाहांडी जिले में स्थित है।
- यह कार्लापाटन वन्यजीव अभ्यारण्य के पास स्थित है, जो ओडिशा के महत्वपूर्ण जैव विविधता-समृद्ध संरक्षित क्षेत्रों में से एक है।
- खनन से संबंधित विकास और संबंधित पर्यावरणीय चिंताओं के कारण इस ब्लॉक ने ध्यान आकर्षित किया है।

यूपीएससी वैल्यू एडिशन:

- राज्य: ओडिशा
- जिला: कालाहांडी
- खनिज: बॉक्साइट

- पास का संरक्षित क्षेत्र: कार्लोपाटन वन्यजीव अभ्यारण्य
- ओडिशा भारत में बॉक्साइट का अग्रणी उत्पादक है, जो ऐसे मानचित्र-आधारित स्थानों को प्रारंभिक परीक्षा के लिए अत्यधिक प्रासंगिक बनाता है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

A (जीएस पेपर-आई | समाज)

प्रश्नांश 1: "भारत की सांस्कृतिक विविधता राष्ट्र-निर्माण के लिए एक शक्ति और एक चुनौती दोनों रही है। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक संस्थाओं द्वारा निभाई गई भूमिका की चर्चा कीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर

परिचय

भारत दुनिया के सबसे सांस्कृतिक रूप से विविध राष्ट्रों में से एक है, जो कई धर्मों, भाषाओं, जातीय समूहों, रीति-रिवाजों और परंपराओं की विशेषता रखता है। विविधता को एक बाधा के रूप में देखने के बजाय, संविधान निर्माताओं ने इसे भारत की लोकतांत्रिक पहचान की नींव के रूप में परिकल्पित किया। इसलिए भारत में राष्ट्रीय एकता सांस्कृतिक एकरूपता के माध्यम से नहीं, बल्कि संवैधानिक नैतिकता, लोकतांत्रिक संस्थाओं और साझा नागरिक मूल्यों के माध्यम से विकसित हुई है। वैश्वीकरण, प्रवासन और डिजिटल संचार से चिह्नित एक तेजी से बदलते सामाजिक वातावरण में, विविधता के बीच एकता को संरक्षित करना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

मुख्य भाग

संविधान अपनी प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों को एम्बेड करके राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे मजबूत आधार प्रदान करता है। ये आदर्श सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक नागरिक, जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के बावजूद, समान गरिमा और अवसरों का आनंद ले। अनुच्छेद 14 से 18 कानून के समक्ष समानता की गारंटी देते हैं और भेदभाव को प्रतिबंधित करते हैं, जिससे पारंपरिक सामाजिक पदानुक्रम कमजोर होते हैं। साथ ही, अनुच्छेद 25 से 30 धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं और अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की रक्षा करते हैं, जिससे विविध समुदायों को भारतीय संघ के अभिन्न अंग बने रहने के साथ-साथ अपनी पहचान को संरक्षित करने की अनुमति मिलती है। अनुच्छेद 51ए के तहत मौलिक कर्तव्य नागरिकों को सद्भाव को बढ़ावा देने और धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय अंतरों को पार करते हुए आम भाईचारे की भावना को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, संवैधानिक मूल्य विविधता को संघर्ष के बजाय लोकतांत्रिक एकता के साधन में बदलते हैं।

सामाजिक संस्थाएं संवैधानिक आदर्शों को रोजमर्रा के अभ्यास में बदलने में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। परिवार पहली संस्था के रूप में कार्य करता है जहाँ सहिष्णुता, सहयोग और आपसी सम्मान जैसे मूल्यों को सुसंस्कृत किया जाता है। शैक्षणिक संस्थान संवैधानिक शिक्षा, नागरिक जागरूकता और भारत की मिश्रित संस्कृति के संपर्क के माध्यम से इन मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 छात्रों के बीच राष्ट्रीय चेतना को

मजबूत करने के लिए संवैधानिक मूल्यों, बहुभाषीवाद और अनुभवात्मक सीखने पर भी जोर देती है। इसी तरह, नागरिक समाज संगठन अंतर-समुदाय संवाद, सामाजिक समावेश और सहभागी विकास को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे सामाजिक तनाव कम होता है। धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थान, जब समावेशिता के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होते हैं, तो विविध समुदायों के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देते हैं। मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म भी जानकारी प्रसारित करके और क्षेत्रों में नागरिकों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता को प्रभावित करते हैं, हालांकि उनकी सकारात्मक भूमिका जिम्मेदार पत्रकारिता और गलत सूचना की रोकथाम पर निर्भर करती है।

इन संस्थागत सुरक्षा उपायों के बावजूद, कई चुनौतियाँ राष्ट्रीय एकता में बाधा डालती रहती हैं। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, जाति-आधारित भेदभाव, क्षेत्रवाद, भाषाई अंधराष्ट्रीयता (chauvinism) और पहचान की राजनीति समय-समय पर सामाजिक विभाजन पैदा करती हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचना के तेजी से प्रसार ने अभद्र भाषा को तेज कर दिया है और सामाजिक दरार को गहरा कर दिया है। आर्थिक असमानताएं और असमान क्षेत्रीय विकास हाशिए के समूहों के बीच अलगाव की भावना में और योगदान करते हैं। ये चुनौतियाँ प्रदर्शित करती हैं कि संवैधानिक गारंटी अकेले एकता सुनिश्चित नहीं कर सकती जब तक कि वे नैतिक शासन, समावेशी विकास और सक्रिय नागरिक भागीदारी द्वारा समर्थित न हों।

इसलिए राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। संवैधानिक साक्षरता शिक्षा का एक अभिन्न अंग बननी चाहिए ताकि नागरिक न केवल अपने अधिकारों बल्कि अपने कर्तव्यों को भी समझ सकें। सहयोगात्मक संघवाद को भारत के बहुलवादी चरित्र का सम्मान करते हुए संघ और राज्यों के बीच विश्वास को मजबूत करना जारी रखना चाहिए। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत', सांस्कृतिक आदान-प्रदान पहलों और अंतर-राज्यीय शैक्षिक सहयोग जैसे कार्यक्रम नागरिकों को देश की सांस्कृतिक विविधता की सराहना करने में सक्षम बनाकर भावनात्मक एकता को बढ़ावा देते हैं। समावेशी आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और अवसरों तक समान पहुंच समान रूप से आवश्यक बनी हुई है क्योंकि लगातार असमानताओं के बीच सामाजिक सौहार्द पनप नहीं सकता है।

निष्कर्ष

भारत का अनुभव यह प्रदर्शित करता है कि एकता विविधता को समाप्त करने से नहीं बल्कि एक संवैधानिक ढांचे के भीतर आपसी सम्मान का पोषण करने से प्राप्त होती है। संवैधानिक मूल्य कानूनी और नैतिक आधार प्रदान करते हैं, जबकि सामाजिक संस्थाएं इन सिद्धांतों को सामाजिक व्यवहार में अनुवादित करती हैं। जैसा कि डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने जोर दिया था, संवैधानिक नैतिकता केवल एक संवैधानिक आदर्श के बजाय जीवन का एक तरीका बननी चाहिए। तभी भारत की उल्लेखनीय विविधता राष्ट्र-निर्माण में अपनी सबसे बड़ी ताकत बनी रह सकती है।

(जीएस पेपर-II | राजनीति और शासन)

प्रश्नांश 2: "लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की सफलता संवैधानिक प्रावधानों की तुलना में वास्तविक हस्तांतरण पर अधिक निर्भर करती है।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक | 250 Words)

नमूना उत्तर

परिचय

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण से तात्पर्य सरकार के उच्च स्तर से स्थानीय संस्थाओं को राजनीतिक, प्रशासनिक और वित्तीय अधिकार के हस्तांतरण से है ताकि शासन अधिक सहभागी, जवाबदेह और उत्तरदायी बन सके। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों ने पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को संस्थागत रूप दिया,

लेकिन विकेंद्रीकरण की प्रभावशीलता इस बात पर काफी हद तक निर्भर करती है कि क्या राज्य वास्तव में इन संस्थानों को शक्तियों, वित्त और पदाधिकारियों का हस्तांतरण करते हैं।

मुख्य भाग

संवैधानिक संशोधनों ने पंचायतों और नगर पालिकाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान करके, नियमित चुनावों का प्रावधान करके, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के लिए आरक्षण, राज्य वित्त आयोगों और राज्य चुनाव आयोगों की स्थापना, और ग्यारहवीं और बारहवीं अनुसूचियों की तैयारी करके स्थानीय शासन को मौलिक रूप से बदल दिया, जो उन विषयों को सूचीबद्ध करती हैं जिन्हें स्थानीय निकायों को हस्तांतरित किया जा सकता है। इन प्रावधानों ने देश भर में एक समान संवैधानिक ढांचा तैयार किया और निरंतरता तथा प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करके जमीनी स्तर के लोकतंत्र को मजबूत किया।

हालांकि, संवैधानिक मान्यता स्वचालित रूप से प्रभावी विकेंद्रीकरण में परिवर्तित नहीं हुई है क्योंकि अधिकार का वास्तविक हस्तांतरण काफी हद तक राज्य सरकारों पर निर्भर करता है। कई राज्यों में, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, सिंचाई और ग्रामीण विकास से संबंधित विभाग स्थानीय सरकारों के बजाय लाइन विभागों के तहत काम करना जारी रखते हैं। स्थानीय निकायों के पास अक्सर अपने कर्मचारियों पर सीमित नियंत्रण होता है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य नौकरशाही पर प्रशासनिक निर्भरता होती है। वित्तीय स्वायत्तता भी अपर्याप्त बनी हुई है क्योंकि अधिकांश पंचायतें मजबूत स्थानीय राजस्व स्रोतों के बजाय संघ और राज्य सरकारों के अनुदान पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं। राज्य वित्त आयोगों के गठन में देरी और उनकी सिफारिशों के अपर्याप्त कार्यान्वयन ने राजकोषीय विकेंद्रीकरण को और कमजोर कर दिया है।

एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती स्थानीय शासन की गुणवत्ता से संबंधित है। कई निर्वाचित प्रतिनिधियों के पास पर्याप्त प्रशासनिक और वित्तीय प्रशिक्षण का अभाव है, जिससे निर्णय लेने की प्रभावशीलता कम हो जाती है। राजनीतिक हस्तक्षेप, अनियमित ग्राम सभा की बैठकें, कुलीन कब्जा (elite capture) और अपर्याप्त सामाजिक लेखा परीक्षा (social audits) सहभागी लोकतंत्र को कमजोर करते हैं। शहरी स्थानीय निकायों को तेजी से शहरीकरण, बुनियादी ढांचे की कमियों और ओवरलैपिंग संस्थागत क्षेत्राधिकारों से उत्पन्न अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप, संवैधानिक सुरक्षा उपायों के बावजूद, स्थानीय सरकारें अक्सर स्व-सरकार के स्वायत्त संस्थानों के बजाय कार्यान्वयन एजेंसियों के रूप में कार्य करती हैं।

हाल की पहलों ने इन दूरियों को पाटने का प्रयास किया है। ई-ग्राम स्वराज पोर्टल, डिजिटल लेखा प्रणाली, जीआईएस-आधारित योजना, ऑनलाइन सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन और स्वामित्व (SVAMITVA) योजना ने पारदर्शिता, योजना और संपत्ति प्रबंधन में सुधार किया है। पंद्रहवें वित्त आयोग ने प्रदर्शन-लिंकड प्रोत्साहन पर जोर देते हुए स्थानीय निकायों को अनुदान भी बढ़ाया है। ये सुधार बताते हैं कि प्रौद्योगिकी और वित्तीय सहायता केवल तभी विकेंद्रीकरण को मजबूत कर सकती है जब अधिकार हस्तांतरित करने की वास्तविक राजनीतिक प्रतिबद्धता इसके साथ हो।

निष्कर्ष

संवैधानिक संशोधनों ने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की नींव रखी, लेकिन वे प्रक्रिया की केवल शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सच्चे विकेंद्रीकरण के लिए शक्तियों के सार्थक हस्तांतरण, पर्याप्त वित्तीय संसाधनों, प्रशासनिक क्षमता और संस्थागत स्वायत्तता की आवश्यकता होती है। जैसा कि द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने देखा, स्थानीय सरकारों को मात्र कार्यान्वयन एजेंसियों से स्व-सरकार के वास्तविक संस्थानों के रूप में विकसित होना चाहिए। इस विजन को प्राप्त करना सहभागी लोकतंत्र के संवैधानिक आदर्श को साकार करने और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि शासन प्रत्येक नागरिक की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी बना रहे।

(जीएस पेपर III - अर्थव्यवस्था)

प्रश्नांश 3: "वैश्वीकरण ने भारत के आर्थिक विकास में तेजी लाई है लेकिन साथ ही इसकी व्यापक आर्थिक कमजोरियों को भी बढ़ा दिया है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर**परिचय**

वैश्वीकरण व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, पूंजी प्रवाह और ज्ञान की आवाजाही के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के बढ़ते एकीकरण को संदर्भित करता है। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद से, भारत ने अपने उत्पादन ढांचे, व्यापार प्रोफाइल और निवेश परिदृश्य को बदलते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ उत्तरोत्तर एकीकृत किया है। जबकि वैश्वीकरण आर्थिक विकास के एक प्रमुख इंजन के रूप में उभरा है, इसने भारत को बाहरी झटकों, वित्तीय अस्थिरता और रणनीतिक निर्भरता के संपर्क में भी ला दिया है। इसलिए, भारत के विकासात्मक प्रक्षेपवक्र को समझने के लिए इसके अवसरों और चुनौतियों का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है।

Body

भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण इसकी आर्थिक क्षमता को काफी हद तक बढ़ा चुका है। उदारीकरण ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के बड़े प्रवाह को प्रोत्साहित किया, जिससे विनिर्माण और सेवाओं में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, प्रबंधकीय विशेषज्ञता और उत्पादकता में सुधार संभव हुआ। सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रक्रिया आउटसोर्सिंग क्षेत्र वैश्विक नेताओं के रूप में उभरे, जिससे भारत सॉफ्टवेयर सेवाओं के दुनिया के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक बन गया। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अधिक भागीदारी ने निर्यात बाजारों में विविधता लाई और विदेशी मुद्रा की कमाई में काफी योगदान दिया। साथ ही, वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण ने औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में सुधार किया और उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकियों तक पहुंच की सुविधा प्रदान की। इन विकासों ने सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत किया है और G20, WTO और BRICS जैसे संस्थानों के माध्यम से वैश्विक आर्थिक शासन में इसके प्रभाव को बढ़ाया है।

हालांकि, बढ़े हुए एकीकरण ने बाहरी कमजोरियों के प्रति भारत के जोखिम को भी बढ़ा दिया है। वैश्विक वित्तीय संकट, भू-राजनीतिक संघर्ष और आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों ने यह प्रदर्शित किया है कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता घरेलू विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है। COVID-19 महामारी ने वैश्विक उत्पादन नेटवर्क को बुरी तरह बाधित किया, जिससे महत्वपूर्ण चिकित्सा आपूर्ति और औद्योगिक इनपुट की कमी हो गई। इसी तरह, रूस-यूक्रेन संघर्ष ने वैश्विक ऊर्जा और खाद्य बाजारों को प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप आयातित मुद्रास्फीति और भारत के चालू खाता घाटे पर दबाव बढ़ गया। कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव मुद्रास्फीति, राजकोषीय शेष और विनिमय दर स्थिरता को प्रभावित करना जारी रखते हैं क्योंकि भारत आयातित ऊर्जा पर बहुत अधिक निर्भर है।

वित्तीय वैश्वीकरण ने अतिरिक्त व्यापक आर्थिक जोखिम पैदा किए हैं। विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI), FDI के विपरीत, अत्यधिक अस्थिर है और वैश्विक ब्याज दरों और निवेशक भावना में बदलाव के लिए तेजी से प्रतिक्रिया करता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा मौद्रिक नीति का कड़ा होना अक्सर उभरते बाजारों से पूंजी के बहिर्प्रवाह को ट्रिगर करता है, जिससे रुपये का मूल्यहास होता है और वित्तीय बाजार की अस्थिरता बढ़ती है। इस तरह के एपिसोड के लिए बाजार के विश्वास से समझौता किए बिना व्यापक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा कैलिब्रेटेड हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

एक अन्य चिंता महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रणनीतिक निर्भरता से संबंधित है। महामारी के दौरान सेमीकंडक्टर की कमी ने उच्च-प्रौद्योगिक घटकों के लिए बाहरी आपूर्तिकर्ताओं पर भारत की निर्भरता को उजागर किया। इलेक्ट्रॉनिक्स, दुर्लभ पृथ्वी खनिजों और उन्नत विनिर्माण इनपुट में भी इसी तरह की कमजोरियां मौजूद हैं। इन चुनौतियों को पहचानते हुए,

सरकार ने वैश्विक बाजारों के साथ एकीकृत रहते हुए घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना, आत्मनिर्भर भारत, राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति और सेमीकंडक्टर विनिर्माण प्रोत्साहन जैसी पहल शुरू की हैं।

वैश्वीकरण का भविष्य तेजी से फ्रेंड-शोरिंग, चाइना-प्लस-वन रणनीति और लचीली आपूर्ति श्रृंखला जैसे अवधारणाओं द्वारा विशेषता है। भारत के पास अपने जनसांख्यिकी लाभांश का लाभ उठाकर, डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार करके और व्यापार करने में आसानी में सुधार करके एक पसंदीदा निवेश गंतव्य के रूप में उभरने का अवसर है। हालांकि, निरंतर सफलता के लिए नवाचार, कौशल विकास, बुनियादी ढांचा और निर्यात प्रतिस्पर्धा में निवेश की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने विकास, नवाचार और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में तेजी लाकर निश्चित रूप से भारत के आर्थिक परिदृश्य को बदल दिया है। फिर भी, हाल के वैश्विक संकटों ने यह प्रदर्शित किया है कि आर्थिक खुलेपन को घरेलू लचीलेपन, विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं और रणनीतिक आत्मनिर्भरता द्वारा पूरक होना चाहिए। इसलिए भारत का दीर्घकालिक उद्देश्य वैश्वीकरण को समाप्त करना नहीं बल्कि "लचीला वैश्वीकरण" होना चाहिए, जहाँ अंतरराष्ट्रीय एकीकरण मजबूत घरेलू विनिर्माण, तकनीकी क्षमता और ध्वनि व्यापक आर्थिक प्रबंधन द्वारा समर्थित हो।

(जीएस पेपर IV - नैतिकता, सत्यनिष्ठा और योग्यता)

प्रश्नांश 4: "सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को केवल कानूनी प्रावधानों के माध्यम से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है; इसके लिए शासन के हर स्तर पर नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता होती है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।
(10 अंक | 150 शब्द)

नमूना उत्तर

परिचय

सत्यनिष्ठा मूल्यों, निर्णयों और कार्यों के बीच स्थिरता का प्रतिनिधित्व करती है। लोक प्रशासन में, यह ईमानदारी, निष्पक्षता, जवाबदेहता और जन कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हालांकि कानूनी प्रावधान आचरण के न्यूनतम मानक स्थापित करते हैं, वे अकेले नैतिक शासन की गारंटी नहीं दे सकते हैं क्योंकि कई प्रशासनिक स्थितियों में लिखित नियमों के दायरे से परे नैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, सार्वजनिक विश्वास को बनाए रखने और लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करने के लिए नैतिक नेतृत्व अनिवार्य हो जाता है।

मुख्य भाग

भारत में लोक प्रशासन को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे में संवैधानिक प्रावधान, आचरण नियम, भ्रष्टाचार विरोधी कानून और केंद्रीय सतर्कता आयोग, लोकपाल और भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक जैसे संस्थागत तंत्र शामिल हैं। ये संस्थान व्यवहार के मानक निर्धारित करके और कदाचार को दंडित करके जवाबदेही बनाते हैं। हालांकि, शासन अक्सर ऐसी प्रस्तुतियां देता है जहां वैधता और नैतिकता समान नहीं होती हैं। प्रशासनिक अधिकारियों को अक्सर परस्पर विरोधी लोक हितों, राजनीतिक दबावों या मानवीय विचारों से जुड़े नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है जिन्हें केवल कानूनी व्याख्या के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता है। ऐसी परिस्थितियों में, सत्यनिष्ठा वैधानिक दायित्व के बजाय व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास का मामला बन जाती है।

नैतिक नेतृत्व यह प्रदर्शित करके संस्थागत संस्कृति को प्रभावित करता है कि सार्वजनिक पद व्यक्तिगत विशेषाधिकार का स्रोत न होकर एक सार्वजनिक ट्रस्ट है। एक सिविल सेवक जो बाहरी दबाव के बावजूद सार्वजनिक अनुबंधों को पारदर्शी रूप से प्रदान करता है, बिना किसी भेदभाव के ईमानदारी से कल्याणकारी कार्यक्रमों को लागू करता है या

प्रशासनिक विफलताओं के लिए तुरंत जिम्मेदारी स्वीकार करता है, वह लोकतांत्रिक संस्थानों में नागरिकों के विश्वास को मजबूत करता है। इसी तरह, जो अधिकारी व्हिसलब्लोअर की रक्षा करते हैं, पारदर्शिता को प्रोत्साहित करते हैं और व्यक्तिगत या राजनीतिक हितों से ऊपर जन कल्याण को रखते हैं, वे प्रशासनिक पदानुक्रम में नैतिक आचरण को प्रेरित करते हैं। ऐसा नेतृत्व एक संगठनात्मक वातावरण बनाता है जिसमें सत्यनिष्ठा केवल सजा के डर से लागू होने के बजाय आत्मनिर्भर हो जाती है।

डिजिटल शासन के युग में नैतिक नेतृत्व का महत्व और भी अधिक हो गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), बड़े डेटा और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि की है लेकिन साथ ही गोपनीयता, एल्गोरिथम पूर्वाग्रह और सार्वजनिक डेटा के दुरुपयोग से संबंधित चिंताएं पैदा की हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए नैतिक निर्णय लेना आवश्यक है कि तकनीकी नवाचार संवैधानिक मूल्यों और मानव गरिमा के अनुरूप बना रहे। सहानुभूति, करुणा, निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे मूल्य प्रशासकों को सार्वजनिक विश्वास बनाए रखते हुए न्याय के साथ दक्षता को संतुलित करने में सक्षम बनाते हैं।

भारत का संवैधानिक दर्शन स्वयं नैतिक नेतृत्व के महत्व को मजबूत करता है। प्रस्तावना, मौलिक कर्तव्य और निर्देशक सिद्धांत सामूहिक रूप से शासन के मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में न्याय, समानता और बंधुत्व पर जोर देते हैं। ये संवैधानिक आदर्श तभी व्यावहारिक महत्व प्राप्त करते हैं जब प्रशासक उन्हें केवल कानूनी दायित्वों के बजाय नैतिक प्रतिबद्धताओं के रूप में आंतरिक बनाते हैं।

निष्कर्ष

कानून अनैतिक व्यवहार को दंडित कर सकते हैं, लेकिन वे नैतिक चरित्र नहीं बना सकते हैं। इसलिए सतत सुशासन उन नेताओं पर निर्भर करता है जो अपने निर्णयों, आचरण और जन सेवा के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करते हैं। जैसा कि द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने देखा, नैतिकता प्रभावी शासन की नींव का गठन करती है क्योंकि संस्थान अंततः उन व्यक्तियों की सत्यनिष्ठा से अपनी विश्वसनीयता प्राप्त करते हैं जो उनका नेतृत्व करते हैं। पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक-केंद्रित प्रशासन के संवैधानिक दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए ऐसा नैतिक नेतृत्व अनिवार्य बना हुआ है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

(करेंट अफेयर्स)

प्रश्नांश 5: "पॉलिमर बैंकनोट दुनिया भर में मुद्रा प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण नवाचार के रूप में उभरे हैं। पॉलिमर बैंकनोट्स से जुड़ी खूबियों और चुनौतियों का परीक्षण कीजिए। इस संदर्भ में, पॉलिमर मुद्रा के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक की हालिया पहल के महत्व पर चर्चा कीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर

परिचय

मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम नहीं है बल्कि राष्ट्र की आर्थिक संप्रभुता, जन विश्वास और वित्तीय स्थिरता का प्रतीक भी है। तकनीकी प्रगति और नकली मुद्रा, स्थायित्व और स्थिरता के संबंध में बढ़ती चिंताओं के साथ, कई देशों ने पारंपरिक कपास-कागज के बैंकनोटों से पॉलिमर-आधारित बैंकनोटों की ओर रुख किया है। इस पृष्ठभूमि में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने मुद्रा प्रबंधन को आधुनिक बनाने, सुरक्षा बढ़ाने और जीवनचक्र की लागत को कम करने की अपनी दीर्घकालिक रणनीति के हिस्से के रूप में पॉलिमर बैंकनोटों पर चर्चा को नवीनीकृत किया है। यह पहल अपनी मौद्रिक प्रणाली की अखंडता और दक्षता को बनाए रखते हुए उन्नत तकनीकों को अपनाने के भारत के व्यापक उद्देश्य को दर्शाती है।

मुख्य भाग

पॉलिमर बैंकनोट पारंपरिक कपास-आधारित कागज के बजाय एक विशेष रूप से डिजाइन किए गए प्लास्टिक सब्सट्रेट का उपयोग करके निर्मित किए जाते हैं। पहली बार 1988 में ऑस्ट्रेलिया में पेश किए गए, वे अब अपनी बेहतर स्थायित्व और उन्नत सुरक्षा सुविधाओं के कारण कई देशों द्वारा पूरी तरह या आंशिक रूप से उपयोग किए जाते हैं। कागज की मुद्रा के विपरीत, पॉलिमर नोट नमी, धूल, फटने और बार-बार मुड़ने के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी हैं, जिससे वे बहुत लंबी अवधि तक संचलन में रह सकते हैं। हालांकि पॉलिमर नोटों की शुरुआती उत्पादन लागत अधिक होती है, लेकिन उनका विस्तारित जीवनकाल समय के साथ प्रतिस्थापन व्यय को काफी कम कर देता है, जिससे वे लंबे समय में आर्थिक रूप से कुशल हो जाते हैं।

पॉलिमर मुद्रा के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक जालसाजी के प्रति इसकी बेहतर प्रतिरोधक क्षमता में निहित है। पॉलिमर सब्सट्रेट पारदर्शी खिड़कियों, होलोग्राफिक स्ट्रिप्स, रंग-बदलने वाली स्याही, माइक्रो-टेक्स्ट, लेटेंट इमेज और जटिल ऑप्टिकल डिजाइन जैसी परिष्कृत सुरक्षा सुविधाओं की सुविधा प्रदान करते हैं जिन्हें पारंपरिक मुद्रण तकनीकों का उपयोग करके复制 करना काफी कठिन है। यह भारत के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ नकली मुद्रा ने समय-समय पर वित्तीय सुरक्षा और मौद्रिक स्थिरता के लिए चुनौतियाँ पैदा की हैं। बेहतर सुरक्षा विशेषताएं जाली नोटों का पता लगाने और उनके प्रतिस्थापन से जुड़ी लागत को कम करते हुए मुद्रा की प्रामाणिकता में जनता के विश्वास को भी मजबूत करती हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ पर्यावरणीय स्थिरता से संबंधित है। हालांकि पॉलिमर नोट प्लास्टिक पॉलिमर से प्राप्त होते हैं, लेकिन उनका लंबा संचलन जीवन बार-बार प्रतिस्थापन के लिए आवश्यक कच्चे माल, मुद्रण स्याही और परिवहन संसाधनों की कुल खपत को कम करता है। अपने उपयोग योग्य जीवन के अंत में, पॉलिमर नोटों को विभिन्न प्लास्टिक उत्पादों में पुनर्चक्रित (recycle) किया जा सकता है, जिससे उचित रीसाइक्लिंग बुनियादी ढांचे द्वारा समर्थित होने पर चक्रीय अर्थव्यवस्था (circular economy) के उद्देश्यों में योगदान मिलता है। उनकी गैर-छिद्रपूर्ण सतह उन्हें नमी, गंदगी और सूक्ष्मजीव संदूषण के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाती है, जिससे संचलन के दौरान स्वच्छता में सुधार होता है, विशेष रूप से घनी आबादी वाली अर्थव्यवस्थाओं में जहाँ नकदी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इन फायदों के बावजूद, पॉलिमर मुद्रा कई व्यावहारिक चुनौतियाँ भी पेश करती है। पॉलिमर नोट उत्पादन स्थापित करने के लिए विशेष मुद्रण तकनीक, सुरक्षा उपकरण और विनिर्माण सुविधाओं में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है। मौजूदा एटीएम, मुद्रा गिनती मशीनों, छँटाई उपकरणों और वेंडिंग प्रणालियों को नए सब्सट्रेट के साथ संगतता सुनिश्चित करने के लिए पुनः कैलिब्रेशन या प्रतिस्थापन की आवश्यकता हो सकती है। सार्वजनिक अनुकूलन भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि पॉलिमर नोट अलग-अलग भौतिक विशेषताएं प्रदर्शित करते हैं, जिसमें लचीलापन और बनावट शामिल है, जो शुरू में हैंडलिंग कठिनाइयों पैदा कर सकता है। इसके अलावा, पहने हुए पॉलिमर नोटों के पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार निपटान को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी रीसाइक्लिंग तंत्र विकसित किए जाने चाहिए।

भारतीय संदर्भ में, RBI की पहल को तत्काल राष्ट्रव्यापी संक्रमण के बजाय एक व्यापक मुद्रा प्रबंधन रणनीति के हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए। केंद्रीय बैंक ने निरंतर तकनीकी नवाचार के माध्यम से भारतीय बैंकनोटों की गुणवत्ता, सुरक्षा और दीर्घायु में सुधार करने पर लगातार जोर दिया है। पॉलिमर मुद्रा का मूल्यांकन करना भारत की मुद्रा प्रणाली की अखंडता को मजबूत करने और दीर्घकालिक रखरखाव लागत को कम करने के RBI के उद्देश्य के साथ संरेखित होता है। किसी भी भविष्य के रोलआउट के चरणबद्ध होने की उम्मीद है, जो पायलट अध्ययन, लागत-लाभ विश्लेषण, जलवायु उपयुक्तता और सार्वजनिक स्वीकृति पर आधारित हो। इस तरह का एक कैलिब्रेटेड दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत के पास दुनिया के सबसे बड़े नकद संचलन नेटवर्क में से एक है, जिसके लिए किसी भी प्रमुख मुद्रा सुधार को पेश करने से पहले सावधानीपूर्वक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

यह प्रस्ताव भारत के तेजी से विकसित हो रहे वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में भी महत्व प्राप्त करता है। जबकि यूपीआई (UPI) जैसे डिजिटल भुगतान प्लेटफार्मों ने कैशलेस लेनदेन का काफी विस्तार किया है, भौतिक मुद्रा विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था और सीमित डिजिटल बुनियादी ढांचे वाले क्षेत्रों में अपरिहार्य बनी हुई है। परिणामस्वरूप, भौतिक बैंकनोटों की गुणवत्ता और सुरक्षा में सुधार करना समावेशी वित्तीय प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण घटक बना हुआ है। इसलिए पॉलिमर मुद्रा को डिजिटल भुगतान के विकल्प के बजाय उनके पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए।

निष्कर्ष

पॉलिमर बैंकनोट स्थायित्व, सुरक्षा और परिचालन दक्षता को मिलाकर आधुनिक मुद्रा प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत जैसी बड़ी नकदी-निर्भर अर्थव्यवस्था के लिए, अल्पकालिक विचारों के बजाय व्यापक आर्थिक, तकनीकी और पर्यावरणीय मूल्यांकन के आधार पर उनकी स्वीकार्यता होनी चाहिए। भारतीय रिजर्व बैंक का सतर्क दृष्टिकोण वित्तीय स्थिरता के साथ नवाचार को संतुलित करते हुए ध्वनि मौद्रिक शासन को दर्शाता है। यदि कठोर पायलट परीक्षण और बुनियादी ढांचे की तैयारी के बाद कार्यान्वित किया जाता है, तो पॉलिमर बैंकनोट जालसाजी को कम करके, दीर्घकालिक लागत को कम करके और देश की मौद्रिक प्रणाली में जनता के विश्वास को बढ़ाकर भारत के मुद्रा पारिस्थितिकी तंत्र को काफी मजबूत कर सकते हैं।

यूपीएससी के लिए वैल्यू एडिशन

- **पॉलिमर बैंकनोट्स का उपयोग करने वाले देश:** ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, वियतनाम, रोमानिया, ब्रुनेई, नाइजीरिया (चयनित मूल्यवर्ग) और कई अन्य।
- **मुख्य लाभ:** अधिक स्थायित्व, बेहतर सुरक्षा, कम जीवनचक्र लागत, बेहतर स्वच्छता और पुनर्चक्रण योग्यता।
- **प्रमुख चुनौतियां:** उच्च प्रारंभिक उत्पादन लागत, बुनियादी ढांचे का उन्नयन, सार्वजनिक अनुकूलन और जीवन के अंत में रीसाइक्लिंग।
- **अपेक्षित यूपीएससी कीवर्ड:** मुद्रा प्रबंधन, नकली मुद्रा, वित्तीय स्थिरता, मौद्रिक शासन, जीवनचक्र लागत, सुरक्षा विशेषताएं, टिकाऊ मुद्रा, RBI, डिजिटल अर्थव्यवस्था, चक्रीय अर्थव्यवस्था।

Dream | Dare | Deliver